INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

केदारघाटी आपदा प्रबंधन एवं प्रिंट मीडिया कवरेजः अंतर्वस्तु विश्लेषण

डॉ श्रीकृष्ण उनियाल
ब्यूरो प्रभारी
अमर उजाला
श्रीनगर गढ़वाल
उत्तराखंड।

शारांश

16–17 जून 2013 को उत्तराखंड राज्य में हुयी अचानक मूसलधार वर्षा 340 मिलीमीटर दर्ज की गयी जो सामान्य बेंचमार्क 65.9 मिमी से 375 प्रतिशत ज्यादा थी जिसके कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हुई। इसी दौरान अचानक उत्तरकाशी में बादल फटने के बाद असिगंगा और भागीरथी में जल स्तर बढ़ गया। लगातार होती रही बारिश की वजह से गंगा और यमुना का जल स्तर भी तेजी से बढ़ा। कुमाऊं हो या गढ़वाल मंडल, बारिश हर जगह होती रही। हरिद्वार में भी गंगा खतरे के निशान के करीब पहुंच गई जिसके चलते गंगा तट पर बसे सैकड़ों गांवों में बाढ़ का पानी घुस गया। नतीजा जनजीवन ठहर सा गया। उत्तराखंड में हुयी बारिश का असर उत्तरप्रदेश के सहारनपुर में भी पड़ा जहां से 15 से ज्यादा लोगों के मारे जाने की खबर मिली। पानी छोड़े जाने के कारण यमुना नदी से लगे हरियाणा के करनाल, पानीपत, सोनीपत और फरीदाबाद में भी बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी। इसी बीच उत्तरप्रदेश में शारदा नदी पालिया कलां में खतरे के निशान को पार कर गई और बहराइच जिले में महसी क्षेत्र में 44 गांव के लोगों को दूसरी जगह ले जाने के निर्देश दिये गए।

हिमालय श्रृंखला में स्थित केदारनाथ मन्दिर और आसपास के इलाके बाढ़ के कारण क्षतिग्रस्त हो गए। बाढ़ के कारण भूस्खलन होने लगा, जिससे सैकड़ों घर उजड़ गये और फंसे हुये हजारों लोगों को सुरक्षित पहुंचाया गया। सबसे ज्यादा तबाही रूद्रप्रयाग जिले में स्थित शिव की नगरी केदारनाथ में हुई। केदारनाथ मंदिर का मुख्य हिस्सा और सदियों पुराना गुंबद तो सुरक्षित रहा लेकिन प्रवेश द्वार और आस–पास के सारे इलाके या तो बह गए या पूरी तरह तबाह हो गए। केदारनाथ, गौरीकुंड, रामबाड़ा, सोनप्रयाग, चंद्रापुरी, विजयनगर, अगस्तमुनि में भारी नुकसान हुआ। मंदाकिनी नदी में बाढ़ आने से नदियों के किनारे बसे गांव व कस्बों का नामोनिशान मिट गया। इस स्थिति को शासन–प्रशासन एवं देश–विदेश तक पहुंचाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण रही। मीडिया ने प्रत्यक्ष रूप से सरकार और पीड़ित लोगों के बीच एक सेतु का काम किया। मीडिया के माध्यम से शासन–प्रशासन को आपदा प्रभावित क्षेत्रों की स्थिति उजागर करने में मदद मिली। जिसके कारण

प्रभावित क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन को त्वरित रूप से सक्रिय किया गया। इस शोध पत्र में जून 2013 की केदारघाटी आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना–

16 और 17 जून 2013 को केदारघाटी में आई जलप्रलय ने पूरे उत्तराखंड में दर्द और आंसुओं के ऐसे निशान छोड़े, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। इस दौरान उत्तराखंड राज्य में हुई अचानक मूसलधार वर्षा 340 मिलीमीटर दर्ज की गयी जो सामान्य बेंचमार्क 65.9 मिमी से 375 प्रतिशत ज्यादा थी, जिसके कारण बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हुई। 15 जून को करीब 20 दिन पहले आए मानसून ने उच्च हिमालय के खास उंचाई वाले क्षेत्रों में जमकर कहर बरसाया। 16 जून को केदारघाटी से शुरू हुए इस महाविनाश के कारण केदारनाथ से लेकर उत्तरकाशी, चमोली,बागेश्वर और पिथौरागढ़ जिलों में हिमालय के ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियों से निचली घाटियों में कितनी ही मानव बस्तियों के साथ सैकड़ों पुल,परियोजनाएं, सरकारी भवन इस विनाशकारी बाढ़ की भेंट चढ़े। चार धाम यात्रा का सीजन होने के कारण हजारों की संख्या में तीर्थयात्री चारों धामों या फिर इनके रास्तों पर थे। गंगोत्री, यमुनोत्री व बदरीनाथ गए यात्री भाग्यशाली रहे। लेकिन केदारनाथ गए यात्री बड़ी संख्या में इस घटना के शिकार बने। इस घटना में दस हजार से अधिक जानें गई। हालांकि सरकारी आंकड़ों के तहत सिर्फ 4042 मौतों की पुष्टि की गई है। सबसे अधिक तबाही रूद्रप्रयाग जिले के मंदाकिनी नदी तथा उसके दोनों ओर स्थित दुर्गम पहाड़ियों से हुए भूस्खलन ने मचाई। केदारनाथ बस्ती पूरी तरह से ध्वस्त हो गई। पवित्र केदारनाथ मंदिर में 10 फीट तक कीचड़, सिल्ट तथा मलबा भर गया। रामबाड़ा का नामोनिशान मिट गया। सारे संपर्क मार्ग टूट गए। सैकड़ों मकान इन उफनाई नदियों में समा गए। चारों तरफ तबाही, मौत तथा बिखरी लाशों का मंजर था। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने मेघ प्रस्फोट की संभावना की पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी तथा उत्तराखंड की सरकार को आगाह कर दिया था लेकिन सरकार तथा प्रशासन हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा।[1]

वर्ष 2013 में जून माह में केदारघाटी में आई प्रलय से सबंधित सूचनाओं, घटनाओं व आपदा प्रबंधन के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर से किए जा रहे कार्यों को उजागर करने में राष्ट्रीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों ने अपना योगदान दिया। समाचार पत्रों में आपदा व आपदा प्रबंधन से सबंधित समाचारों की कवरेज का आकलन करने के लिए इस अध्याय में अध्ययन क्षेत्र में प्रसार वाले प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों के कवरेज का विश्लेषण किया गया है। जिसमें समाचार, लेख, फीचर आदि शामिल हैं। केदारघाटी जल प्रलय के दौरान व उसके उपरांत समाचार पत्रों द्वारा की गई कवरेज का अंतर्वस्तु विश्लेषण इस शोध पत्र में किया गया है।

शोध प्रविधि–

किसी भी विषय का विधि तंत्र मुख्यतः अध्ययन के उद्देश्य, विषय की प्रकृति तथा विभिन्न प्रकार के आकड़ों की उपलब्धता पर निर्भर करता है। शोध अध्ययन में समस्या के प्रत्यक्ष अवलोकन के द्वारा संचित सूचनाओं की अधिक विश्वसनीय, उपयोगी एवं प्रमाणिक माना जाता है। शोध पत्र तैयार करने के लिए तथ्य एवं आंकड़े एकत्र करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित की गई। जबकि द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत समाचार पत्रों में प्रकाशित विषय वस्तु जो जून 2013 की आपदा से संदर्भित थी उनको उपयोग में लाया गया। शोध पत्र में समाचार पत्रों में आपदा से

सबंधित समाचारों के कवरेज के अंतर्वस्तु विश्लेषण के लिए लॉटरी पद्धति से दो हिंदी भाषा के समाचार पत्र व दो अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्रों का चयन किया गया।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तराखंड राज्य का गठन नौ नवंबर वर्ष 2000 को उत्तर प्रदेश से विभक्त होकर हुआ। इसके अंतर्गत वर्तमान में दो मंडल व 13 जिले हैं। इसमें गढ़वाल मंडल के सात व कुमाऊं मंडल के छह जिले शामिल हैं। गढ़वाल मंडल के रूद्रप्रयाग, चमोली व उत्तरकरकाशी जनपद आपदा की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील हैं। इनमें से रूद्रप्रयाग जिला आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित रहा है। 16 एवं 17 जून 2013 को रूद्रप्रयाग के केदारनाथ से लेकर पूरी मंदाकिनी घाटी का क्षेत्र जल प्रलय से तहस–नहस हो गया। यही क्षेत्र शोधार्थी का अध्ययन का क्षेत्र है। 18 सितंबर 1997 में चमोली जनपद तथा टिहरी जनपद के कुछ भागों को मिलाकर रूद्रप्रयाग जनपद की स्थापना की गई थी। वर्तमान में जनपद का विस्तार रूद्रप्रयाग, ऊखीमठ, जखोली तथा वसुकेदार तहसील एवं ऊखीमठ, अगस्तमुनि तथा जखोली विकासखंड के अंतर्गत है।[2] प्रस्तावित शोध अध्ययन में जनपद की केदारघाटी (मंदाकिनी नदी) घाटी को लिया गया है। केदारघाटी का विस्तार $30^0 17'$ उत्तर से $30^0 49'$ उत्तरी अंक्षास तथा $78^0 49'$ पूर्व से $79^0 22'$ पूर्वी देशांतर के मध्य है। मंदाकिनी घाटी का कुल क्षेत्रफल 1648 वर्ग किमी0 के साथ दक्षिण से उत्तर की ओर लंबे उच्चावच अंतराल के मध्य फैला हुआ है।[3] मंदाकिनी घाटी में सबसे कम ऊंचाई 605 मी0 रूद्रप्रयाग से लेकर 6940 केदारनाथ शिखर ऊंचाई के मध्य अनेक कटिबंध विस्तृत हैं।

मुख्य शब्दावाली–प्राकृतिक आपदा, केदारघाटी, आपदा प्रबंधन, मीडिया, विश्लेषण

जून 2013 केदारघाटी आपदाः कब क्या हुआ[2]

- 15 जून–20 दिन पहले आया मानसून
- 16 जून–केदारघाटी में मंदाकिनी का कहर
- 17 जून–हर तरफ तबाही का मंजर
- 18 जून–200 मौत, हजार के लापता होने की आशंका, चौथे दिन केदारनाथ पहुंच पाए सहायता दल।
- 19 जून–62 हजार यात्री अलग–अलग स्थानों पर फंसे, सेना के 5500, आईटीबीपी के 600 जवान बचाव को उतरे।
- 20 जून–केंद्र से एक हजार करोड़ की मदद।
- 21 जून–केदारनाथ से हरिद्वार तक लाशें ही लाशें देखी गई। रामबाड़ा में बचाव दलों को कदम, कदम पर दिखे शव।
- 22 जून–मुख्यमंत्री ने की एक हजार लोगों के मारे जाने की पुष्टि। केंद्रीय गृहमंत्री सुशील कुमार सिंदे ने माना राहत कार्यों में तालमेल की कमी।

- 23 जून–सरकार ने केवल 10 हजार लोगों के फंसे होने की पुष्टि की।
- 25 जून– केदारघाटी में वायु सेना का हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, 20 शहीद
- 26 जून–आपदा के दसवें दिन केदारनाथ में अंतिम संस्कार शुरू।
- 28 जून–यूसैक ने कहा चोराबाड़ी ताल छलकने से आई आपदा।
- 28 जून– सरकार ने 105412 लोगों को बचाने का किया दावा।
- 29 जून–गौरीकुंड से आगे जाने पर रोक।
- 30 जून–सरकार ने माना तीन हजार लोग हुए लापता।
- 02 जुलाई– सेना ने की रेस्क्यू खत्म करने की घोषणा।
- 05 जुलाई–तेज बारिश के चलते फिर सहमी केदारघाटी, कालीमठ में पौराणिक सरस्वती मंदिर बहा।
- 22 जुलाई–केदारनाथ मंदिर में गर्भगृह की सफाई पूरी, वीआईपी पूजा पर तीर्थ पुरोहितों का ऐतराज।
- 24 जुलाई–केदारनाथ से लौट रहा ट्रांस भारत एविएशन कंपनी का हेलीकॉप्टर गरूड़चट्टी के पास दुर्घटनाग्रस्त, पायलट सहित दो मरे।
- 31 जुलाई– राहत कार्यों के लिए केदारनाथ गए एसडीएम अजय अरोड़ा मंदाकिनी नदी के तेज बहाव में बहे।
- 14 अगस्त– आपदा के बाद उपजे हालात देखकर नंदादेवी राजजात यात्रा स्थगित।

Source : https://en.wikipedia.org[3]

केदारघाटी जल प्रलय में गायब हुए लोगों की राज्यवार सूची–[5]

राज्य	लोगों की संख्या
उत्तर प्रदेश	1,150
उत्तराखंड	846
मध्यप्रदेश	542
राजस्थान	511
दिल्ली	216
महाराष्ट्र	163
गुजरात	129
हरियाणा	112
आंध्रप्रदेश	86
बिहार	58
झारखंड	58
पश्चिमी बंगाल	36
पंजाब	33
छत्तीसगढ़	28
उड़ीसा	26
तमिलनाडु	14
कर्नाटका	14
मेघालय	6
चंडीगढ़	4
जम्मू–कश्मीर	3
केरल	2
पांडुचेरी	1
आसाम	1
कुल	4,021

मीडिया की भूमिका–

मीडिया जो मुद्रित , प्रसारित अथवा प्रदर्शित हो सकता है, बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचाने का त्वरित, प्रभावी तथा कुशल संगठित साधन है। मीडिया की सुझावात्मक, सूचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक

भूमिका आवश्यक रूप से आपदा शिक्षा का प्रमुख घटक बनाती है। यह समुदाय को आपदा रोकथाम, न्यूनीकरण तथा पुनर्वास पर शिक्षा प्रदान करने का सबसे प्रभावी तरीका है। इन कार्यों को मीडिया की दोहरी भूमिका, सूचना देने तथा आपदाओं की घटनाओं के विश्लेषण के आधार पर किया जा सकता है। आपदाओं के प्रभावों को न सिर्फ तकनीकी तथा वैज्ञानिक संदर्भों में, बल्कि मानवतावादी, सामाजिक तथा आर्थिक संदर्भों में भी जांच करने की जरूरत है। मीडिया इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मीडिया से सामान्यता निहितार्थ जनसंचार के प्रमुख चैनलों से है। इसमें दूरदर्शन, रेडियो, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, ऑडियो तथा वीडियो कैसेटों के साथ सिनेमा भी शामिल है। प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आपदा प्रबंधन के प्रमुख घटक के रूप में उभरा है।[6]

केदारघाटी जल प्रलय की कवरेज: अंतर्वस्तु विश्लेषण में शामिल समाचार पत्रों का संक्षिप्त विवरण

अमर उजाला– अमर उजाला हिंदी का प्रमुख दैनिक समाचार पत्र है। इसका प्रारंभ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक शहर आगरा से डोरीलाल अग्रवाल तथा मुरारीलाल माहेश्वरी ने 18 अप्रैल सन 1948 को किया था। 1967 में इसका बरेली संस्करण भी शुरू हुआ। 11 दिसंबर 1968 से अमर उजाला मेरठ से भी प्रकाशित होने लगा। अमर उजाला पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रमुख जिलों में सबसे अधिक लोकप्रिय पत्र है। सात राज्यों उत्तराखंड, हिमांचल प्रदेश, जम्मू, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली एनसीआर, चंडीगढ़ और उत्तर प्रदेश में अमर उजाला अपने 20 संस्करण प्रकाशित कर रहा है। अमर उजाला कैरियर, लाइफ स्टाइल, मनोरंजन व महिलाओं से सबंधित परिशिष्ट भी प्रकाशित करता है। अपने उच्च आदर्शों पर चलते हुए भारत में यह हिंदी भाषा के एक प्रमुख समाचार पत्र के रूप में स्थापित है। इसका प्रकाश अमर उजाला पब्लिकेशन लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है। जनवरी–जून 2018 में इसकी प्रसार संख्या प्रतिदिन 2,610,784 थी।[1]

हिंदुस्तान–दैनिक हिंदुस्तान हिंदी का दैनिक समाचार पत्र है। यह 1932 में शुरू हुआ था। इसका उदघाटन महात्मा गांधी ने किया था। 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन छिड़ने पर हिंदुस्तान समाचार पत्र करीब छह माह तक बंद रहा। यह सेंशरशिप के विरोध में था। देश के स्वाधीन होने तक हिंदुस्तान का मुख्य उद्‌देश्य राष्ट्रीय आंदोलन को बढ़ावा देना था। इसे महात्मा गांधी व कांग्रेस का अनुयायी पत्र माना जाता था। गांधी–सुभाष पत्र व्यवहार को हिंदुस्तान ने अविकल रूप से प्रकाशित किया। हिंदुस्तान में क्रांतिकारी यशपाल की कहानी कई सप्ताह तक रोचकता के साथ प्रकाशित हुई। राजस्थान में राजशाही के विरूद्ध आंदोलनों के समाचार इस पत्र में प्रमुखता से प्रकाशित हुए। हैदराबाद सत्याग्रह का भी हिंदुस्तान ने पूर्व समर्थन किया। देवदास गांधी के मार्गदर्शन में इस पत्र ने उच्च आदर्श को अपने साथ रखा और पत्रकारिता की स्वस्थ परंपराएं स्थापित की। वर्तमान में यह समाचार पत्र दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, पटना, भागलपुर, रांची, देहरादून, हल्द्वानी तथा

चंडीगढ़ से एक साथ प्रकाशित होता है, जबकि दिल्ली, पटना, मुजफ्फरनगर, गया, भागलपुर, रांची, जमशेदपुर, धनबाद, लखनऊ, बनारस,मेरठ, आगरा, इलाहाबाद, गोरखपुर, बरेली, मुरादाबाद, अलीगढ़, कानपुर, देहरादून, हरिद्वार और हल्द्वानी संस्करण छप रहे हैं। इसकी पाठक संख्या 94 लाख है।[2]

हिंदुस्तान टाइम्स– भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्र ने प्रमुख योगदान दिया। इसी उददेश्य से 1924 में हिंदुस्तान टाइम्स का प्रारंभ हुआ। यह भारत का मुख्य समाचार पत्र है। हिंदुस्तान टाइम्स मीडिया लिमिटेड द्वारा यह भारत के कई राज्यों से प्रकाशित हो रहा है। वर्तमान में नई दिल्ली, मुंबई, लखनऊ, पटना, रांची, भोपाल, चंडीगढ़ और कलकत्ता से प्रकाशित किया जा रहा है। युवाओं पर फोकस एचटी नैक्स्ट समाचार पत्र का भी हिंदुस्तान टाइम्स ने 2004 में प्रकाशन किया। इसका मुंबई संस्करण 14 जुलाई 2005 को प्रकाशित किया गया। इसके अन्य संस्करणों में अंग्रेजी भाषा का व्यावसायिक समाचार पत्र मिन्ट, हिंदी में दैनिक हिंदुस्तान, बच्चों से सबंधित मासिक पत्रिका नंदन तथा मासिक साहित्यिक पत्रिका कादंबनी भी शामिल है। शुरूआती दौर में इसके संपादक के0एम0 पानिक्कर इसके पहले संपादक थे। इस समाचार पत्र का उदघाटन 15 सितंबर 1924 को महात्मां गांधी ने किया था। इसका पहला अंक नशा बाजार दिल्ली से प्रकाशित किया गया था और इसमें मुख्यतः आलेख और फीचर शामिल थे। जून 2016 में इसकी प्रसार संख्या प्रतिदिन 1,071,466 थी।[3]

द टाइम्स ऑफ इंडिया– टाइम्स ऑफ इंडिया को मीडिया समूह बेनेट, कोलेमन एंड कंपनी लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है। इसे टाइम्स समूह के रूप में जाना जाता है। यह अंग्रेजी भाषा का दैनिक समाचार पत्र है। इसका प्रबंधन और स्वामित्व बेनेट कोलेमन एंड कंपनी लिमिटेड द्वारा किया जाता है। इसका मुख्यालय दिल्ली में है। दुनिया के सभी अंग्रेजी भाषा के व्यापक पत्रों में इस अखबार की प्रसार संख्या सर्वाधिक है। 2005 में अखबार ने रिपोर्ट दी कि (24 लाख से अधिक प्रसार के साथ) इसे ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन द्वारा दुनिया के सबसे ज्यादा बिकने वाले अंग्रेजी भाषा के समान्य समाचार पत्र के रूप में प्रमाणित किया गया है। यह समूह इकॉनॉमिक टाइम्स, मुंबई मिरर, नवभारत टाइम्स(एक हिंदी भाषा का दैनिक), दि महाराष्ट्र टाइम्स (एक मराठी भाषा का दैनिक) का भी प्रकाशन करता है। वर्तमान में टाइम्स ऑफ इंडिया को अहमदाबाद, भुवनेश्वर, बेंगलुरू, भोपाल, चंडीगढ़, चेन्नई, दिल्ली, गोवा, हैदराबाद, इंदौर, जयपुर, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, मैसुर, नागपुर, पटना, पुणे, रांची, सूरत, कन्नड़ आदि स्थानों से प्रकाशित किया जा रहा है।[4]

तालिका संख्या–7.1

क्र. सं.	समाचार पत्र	शोध अध्ययन में शामिल पृष्ठ	शोध अध्ययन में शामिल 25 सप्ताह के कुल पृष्ठ	प्रत्येक पृष्ठ का क्षेत्रफल **(वर्ग सेमी.)**	कुल पृष्ठों का क्षेत्रफल **(वर्ग सेमी.)**
1	अमर उजाला	4	25x4= 100	(52x32=1664)	(1664x100=166400)
2	हिंदुस्तान	4	25x4= 100	(52x32=1664)	(1664x100=166400)
3	हिंदुस्तान टाइम्स	4	25x4= 100	(52x32=1664)	(1664x100=166400)
4	टाइम्स ऑफ इंडिया	4	25x4= 100	(52x32=1664)	(1664x100=166400)

उपरोक्त सारणी के अनुसार शोध अध्ययन में शामिल अमर उजाला, हिंदुस्तान, हिंदुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र से शोध अध्ययन में चार–चार पृष्ठ शामिल हैं। 18 जून 2013 से 18 दिसंबर 2013 तक की शोध अवधि में कुल 25 सप्ताह के आधार पर एक समाचार पत्र के 25 अंक शामिल किये गये हैं। इस प्रकार शोध अध्ययन अवधि में कुल (25x4= 100) समाचार पृष्ठों में प्रकाशित आपदा सबंधित समाचारों का विश्लेषण किया गया। चारों समाचार पत्रों के एक–एक पृष्ठ का मुद्रित क्षेत्रफल कुल 1664 वर्ग सेमी. मापा गया है। इस आधार पर शोध अध्ययन में शामिल प्रत्येक समाचार पत्र के शोध अध्ययन की अवधि में शामिल कुल पृष्ठों की माप 166400 वर्ग सेमी. है।

तालिका संख्या–7.2

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक माहवार अमर उजाला समाचार पत्र द्वारा की गई आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

क्र.सं.	माह	प्रथम पृष्ठ में कवरेज **(वर्ग सेमी.)**	**गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)**	**संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)**	**विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)**	**योग**	**प्रतिशत**
1	जून	2324.5	948.5	1253	1447.75	5973.75	44.87
2	जुलाई	2544.5	3616.5	0	4992	11153.00	41.89
3	अगस्त	980	1550.25	0	0	2530.25	9.50
4	सितंबर	276.5	1604	0	0	1880.5	7.06
5	अक्तूबर	108	1818.25	0	0	1926.25	7.23
6	नवंबर	96	627.5	0	289.5	1013	3.80
7	दिसंबर	0	988.75	0	0	988.75	4.95
	योग	6329.5	11153.75	1253	6729.25	**25465.25**	15.30

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि केदारघाटी प्रलय में अमर उजाला समाचार पत्र ने 2013 में जून माह में आपदा व आपदा प्रबंधन सबंधित खबरों को 44.87 प्रतिशत स्थान दिया। प्रथम पृष्ठ पर सबसे ज्यादा 2324.5 वर्ग सेमी तथा विशेष पृष्ठ पर 1447.75 वर्ग सेमी. में आपदा सबंधित खबरों को दी गई। जुलाई 2013 माह में यह प्रतिशत 41.89 रहा। इस माह सबसे अधिक स्थान 4992 वर्ग सेमी. स्थान विशेष पृष्ठ पर और गढ़वाल पृष्ठ पर 3616.5 वर्ग सेमी. एवं प्रथम पृष्ठ पर 2544.5 वर्ग सेमी. स्थान आपदा सबंधित खबरों को मिला। जबकि 2013 के अगस्त माह में कुल 9.50 प्रतिशत आपदा सबंधित समाचारों की कवरेज अमर उजाला ने दी। इस माह सर्वाधिक गढ़वाल पृष्ठ पर 1550.25 वर्ग सेमी. स्थान मिला। सितंबर माह में कुल 7.06, अक्तूबर माह मे 7.23, नवंबर माह में 3.80 व दिसंबर माह में 4.95 प्रतिशत स्थान आपदा सबंधित खबरों को दिया गया।

आरेख संख्या–7.2

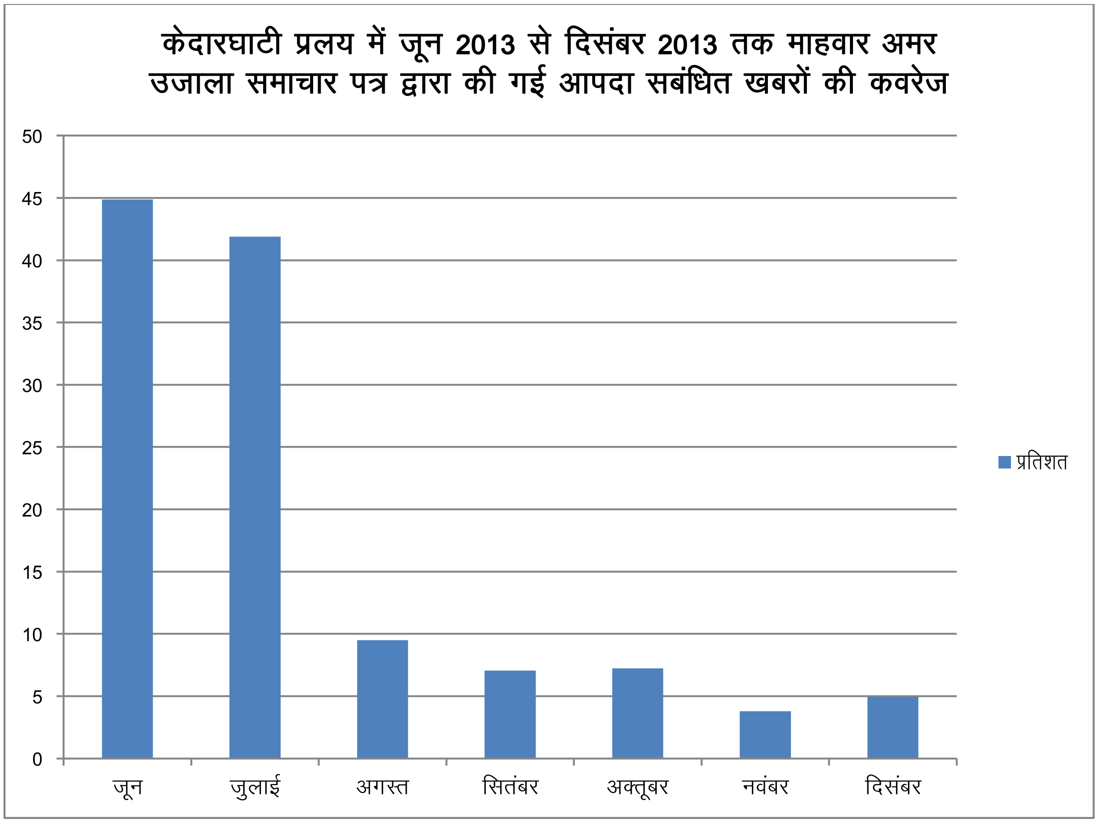

तालिका संख्या–7.3

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक माहवार हिंदुस्तान समाचार पत्र द्वारा की गई आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

क्र.सं.	माह	प्रथम पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	**गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)**	**संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)**	**विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)**	**योग**	**प्रतिशत**
1	जून	2212.75	2032	250	1424	5918.75	44.46
2	जुलाई	2222	2514	392	6534	11662	36.29
3	अगस्त	1454.05	2587.5	0	1664	5705.55	21.43
4	सितंबर	933	370	0	1530	2833	10.64
5	अक्तूबर	404	680.85	160	0	1244.85	4.67
6	नवंबर	0	0	0	0	0	00
7	दिसंबर	160	308	0	1664	2132	10.67
	योग	7385.8	8492.35	802	12816	**29496.15**	17.72

उपरोक्त तालिका के अनुसार केदारघाटी प्रलय में हिंदुस्तान समाचार पत्र ने 2013 में जून माह में आपदा व आपदा प्रबंधन सबंधित खबरों को कुल 44.46 प्रतिशत स्थान दिया। प्रथम पृष्ठ पर सबसे ज्यादा 22124.75 वर्ग सेमी तथा गढ़वाल पृष्ठ पर 2032 वर्ग सेमी. व 1424 वर्ग सेमी. स्थान आपदा सबंधित खबरों को दिया गया। जुलाई 2013 माह में कुल 41.89 प्रतिशत स्थान आपदा सबंधित समाचारों को मिला। इस माह सबसे अधिक स्थान विशेष पृष्ठ पर 6534 वर्ग सेमी. और गढ़वाल पृष्ठ पर 2514 वर्ग सेमी. एवं प्रथम पृष्ठ पर 2222 वर्ग सेमी. स्थान आपदा सबंधित खबरों को मिला। जबकि 2013 के अगस्त माह में कुल 21.43 प्रतिशत आपदा सबंधित समाचारों की कवरेज हिंदुस्तान समाचार पत्र ने दी। इस माह सबसे ज्यादा 2587.5 वर्ग सेमी. स्थान गढ़वाल पृष्ठ पर मिला। सितंबर माह में कुल 10.64, अक्तूबर माह में 4.67, नवंबर माह में 00 व दिसंबर माह में 10.67 प्रतिशत स्थान आपदा सबंधित खबरों को दिया गया।

आरेख संख्या–7.3

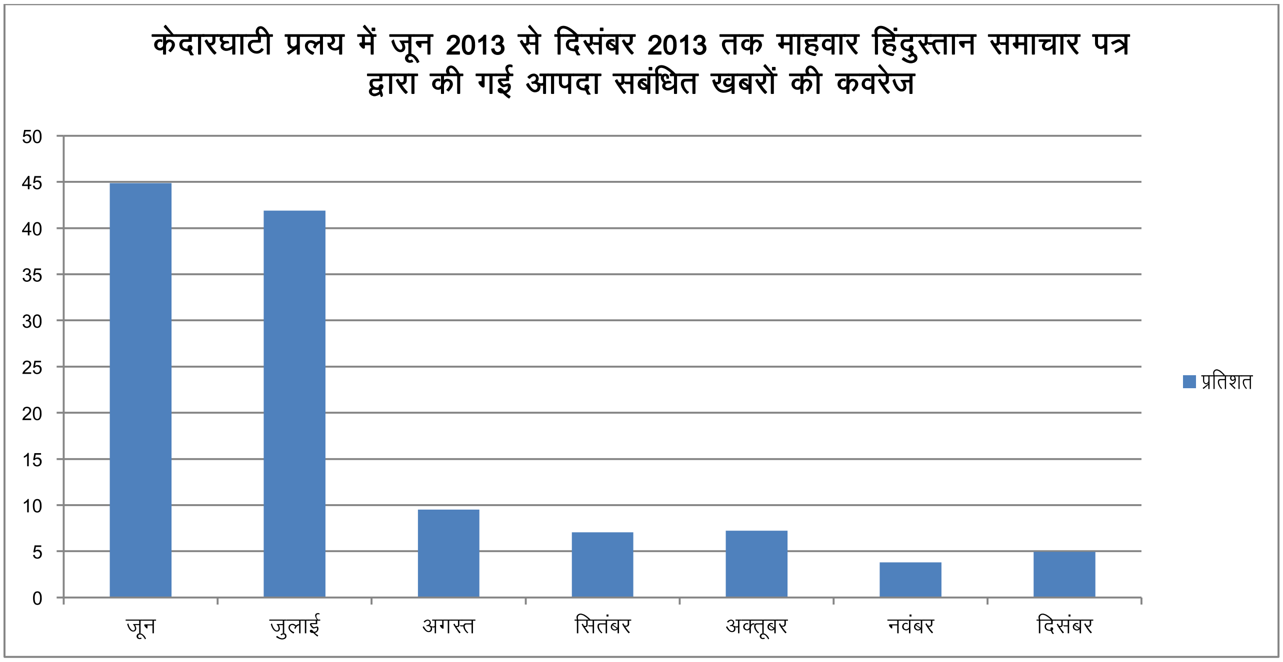

तालिका संख्या–7.4

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक माहवार टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र द्वारा की गई आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

क्र.सं.	माह	प्रथम पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)	संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	योग	प्रतिशत
1	जून	741.53	642	190	1271	2844.53	21.36
2	जुलाई	378	587.6	160	725	1850.6	6.87
3	अगस्त	0	324.5	0	0	324.5	1.21
4	सितंबर	0	324	0	0	324	1.21

5	अक्तूबर	0	207.75	0	0	207.75	0.78
6	नवंबर	0	0	0	0	0	00
7	दिसंबर	0	0	0	274	274	1.37
	योग	1119.53	2085.85	350	2270	**5825.38**	3.50

इस तालिका के अनुसार टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र ने जून 2013 में केदारघाटी आपदा के दौरान जून माह में 21.36 प्रतिशत स्थान आपदा सबंधित खबरों को दिया। जून माह में सबसे ज्यादा विशेष पृष्ठ पर 1271 वर्ग सेमी. में तथा प्रथम पृष्ठ पर 741.53 वर्ग सेमी. में आपदा सबंधित खबरों को दिया गया। जबकि गढ़वाल पृष्ठ पर 642 वर्ग सेमी. में खबरें प्रकाशित की गई। जुलाई 2013 माह में कुल प्रकाशित खबरों का प्रतिशत 6.87 रहा। इस माह सबसे अधिक स्थान विशेष पृष्ठ पर 725 वर्ग सेमी. मिला। अगस्त माह में कुल प्रकाशित खबरों का प्रतिशत 1.21, सितंबर माह में 1.21, अक्तूबर माह में 0.78, नवंबर माह में शून्य व दिसंबर माह में 1.37 रहा।

आरेख संख्या–7.4

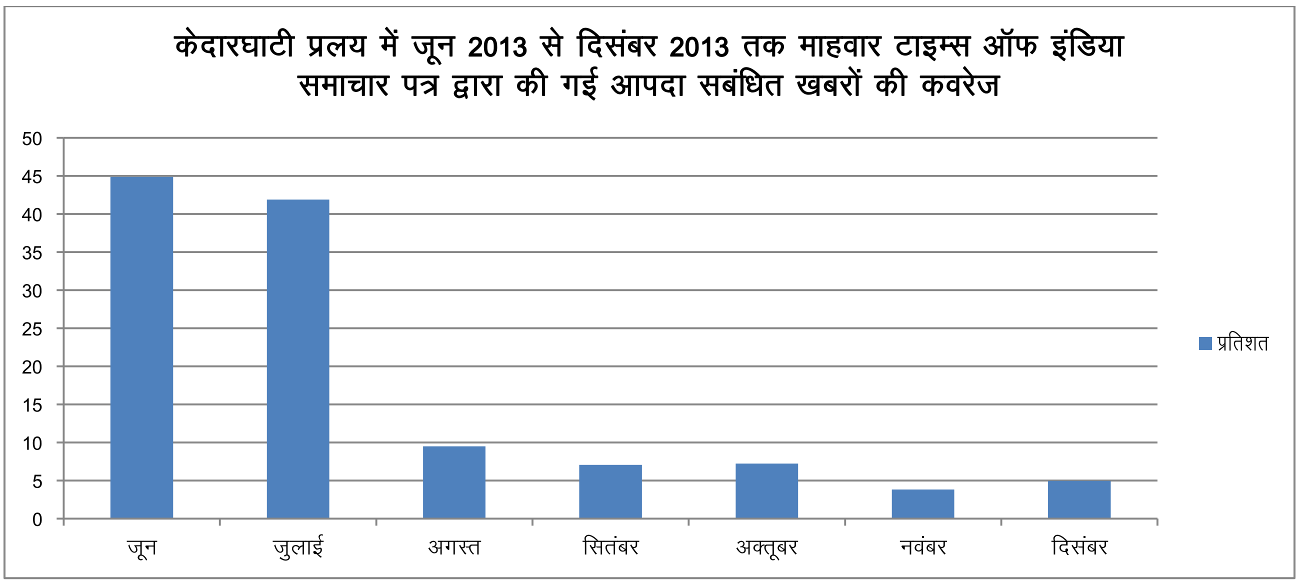

तालिका संख्या–7.5

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्र द्वारा माहवार की गई आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

क्र.सं.	माह	प्रथम पृष्ठ में कवरेज **(वर्ग सेमी.)**	**गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)**	**संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)**	**विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)**	**योग**	**प्रतिशत**
1	जून	478.75	1654	00	2325	4457.75	33.48
2	जुलाई	2667	2373	367.5	4226.6	9634.1	36.18
3	अगस्त	0	76	0	2341.58	2417.58	9.08
4	सितंबर	0	314	0	1683	1997	7.5

5	अक्तूबर	0	162	0	192	354	1.3
6	नवंबर	93.5	0	0	0	93.5	0.35
7	दिसंबर	0	0	0	0	0	00
	योग	3239.25	4579	367.5	10768.18	18953.93	11.39

इस तालिका का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्र ने टाइम्स 2013 जून माह में केदारघाटी आपदा सबंधित खबरों को 33.48 प्रतिशत स्थान दिया। जून माह में सबसे ज्यादा विशेष पृष्ठ पर 2325 वर्ग सेमी. में आपदा सबंधी खबरों को स्थान दिया गया, जबकि गढ़वाल पृष्ठ पर 1664 वर्ग सेमी. एवं प्रथम पृष्ठ पर 478.75 वर्ग सेमी. स्थान मिला। जुलाई माह में कुल प्रकाशित आपदा सबंधी खबरों का प्रतिशत 36.18 रहा। विशेष पृष्ठ पर 4226.6 वर्ग सेमी. प्रथम पृष्ठ पर 2667 वर्ग सेमी. व गढ़वाल पृष्ठ पर 2373 वर्ग सेमी. स्थान आपदा सबंधित खबरों को दिया गया। अगस्त माह 9.08 प्रतिशत कुल आपदा समाचारों की कवरेज हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्र द्वारा की गई। इस माह विशेष पृष्ठ पर 2341.58 प्रतिशत स्थान आपदा खबरों को दिया गया, जबकि प्रथम पृष्ठ पर कोई आपदा सबंधित खबर प्रकाशित नहीं की गई। 2013 सितंबर माह में आपदा सबंधित खबरों को 7.5, अक्तूबर माह में 1.3, नवंबर माह में 0.35 व दिसंबर माह में शून्य प्रतिशत कवरेज मिली।

आरेख संख्या–7.5

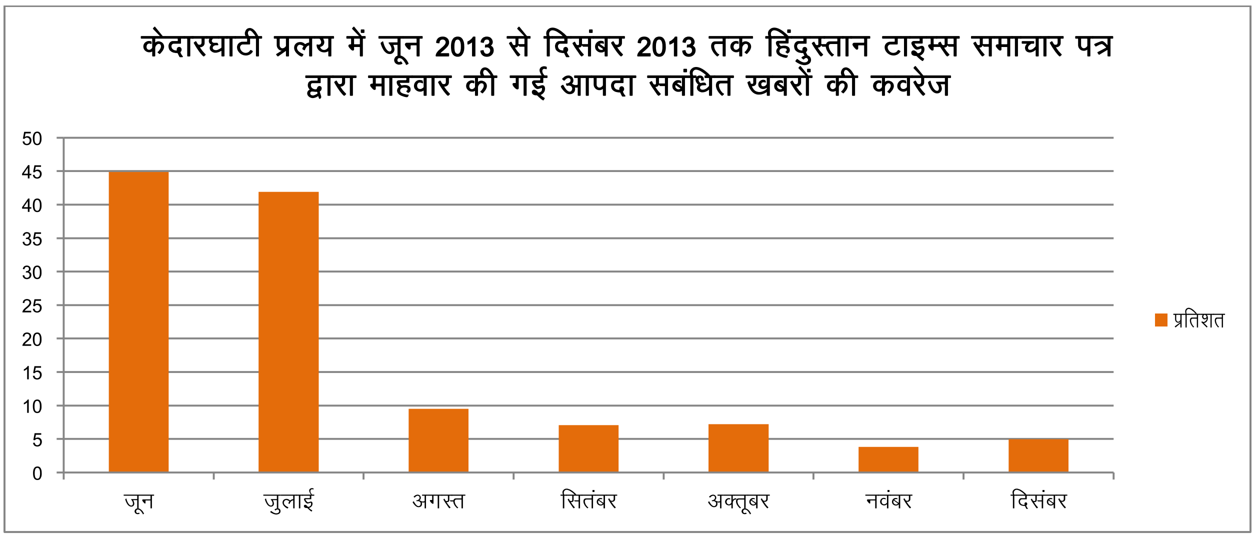

जून 2013 में शोध अध्ययन में शामिल समाचार पत्रों द्वारा की गई आपदा सबंधी खबरों की कवरेज

तालिका संख्या–7.6

क्र.सं.	समाचार पत्र	आपदा खबरों का कवरेज क्षेत्र (वर्ग से.मी.)	समाचार पत्र का कुल मुद्रित क्षेत्र (वर्ग से.मी.)	प्रतिशत
1	अमर उजाला	5973.75	13312	44.87
2	हिंदुस्तान	5918.75	13312	44.46
3	हिंदुस्तान टाइम्स	4457.75	13312	33.48
4	टाइम्स ऑफ इंडिया	2844.53	13312	21.36

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि शोध अध्ययन में शामिल अमर उजाला समाचार पत्र ने जून माह में सर्वाधिक 44.87 प्रतिशत कवरेज आपदा जून 2013 की आपदा सबंधी खबरों को दिया। जबकि हिंदुस्तान समाचार पत्र ने 44.46 प्रतिशत स्थान दिया। अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र हिंदुस्तान टाइम्स ने 33.48 प्रतिशत और टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र ने 21.36 प्रतिशत स्थान जून माह में आपदा सबंधित खबरों को दिया।

आरेख संख्या–7.6

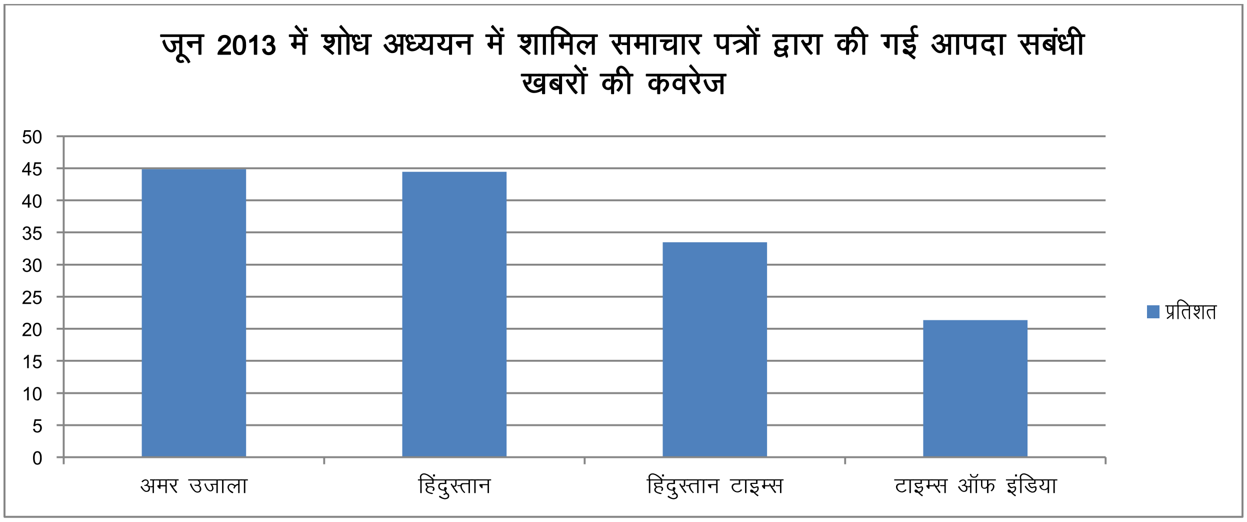

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक अमर उजाला समाचार पत्र द्वारा आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

तालिका संख्या–7.7

क्र. सं.	पृष्ठ	कुल 25 सप्ताह के पृष्ठ का क्षेत्रफल**(वर्ग सेमी.)** (52×32×25)	**समाचार कवरेज (वर्ग सेमी.)**	प्रतिशत
1	प्रथम पृष्ठ में कवरेज(वर्ग सेमी.)	41600	6329.5	15.22
2	गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)	41600	11153.75	26.81
3	संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	1253	3.01
4	विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	6729.25	16.17

केदारघाटी जल प्रलय में 18 जून 2013 से लेकर 18 दिसंबर 2013 तक अमर उजाला समाचार पत्र ने गढ़वाल पृष्ठ पर आपदा सबंधित खबरों की सबसे ज्यादा 1115.75 वर्ग सेमी. में कवरेज की। इसका प्रतिशत 26.81 रहा। विशेष पृष्ठ पर आपदा सबंधित खबरों की कवरेज 6729.25 वर्ग सेमी. यानि 16.17 प्रतिशत रही। प्रथम पृष्ठ पर अमर उजाला ने आपदा सबंधित खबरों को 15.22 प्रतिशत स्थान दिया, जबकि संपादकीय पृष्ठ पर 1253 वर्ग सेमी. यानि 3.01 प्रतिशत स्थान दिया।

आरेख संख्या–7.7

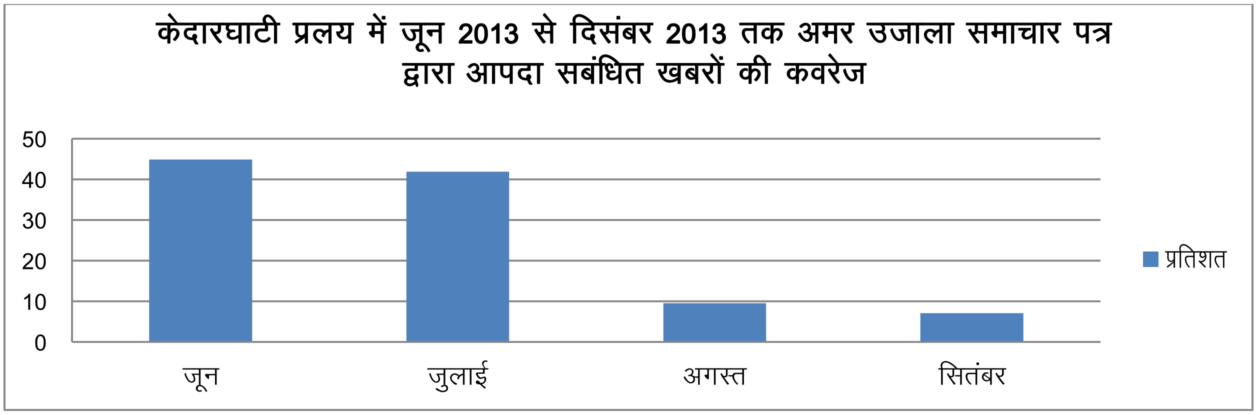

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक हिंदुस्तान समाचार पत्र द्वारा आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

तालिका संख्या–7.8

क्र.सं.	पृष्ठ	कुल 25 सप्ताह के पृष्ठ का क्षेत्रफल**(वर्ग सेमी.)** (52×32×25)	**समाचार कवरेज (वर्ग सेमी.)**	प्रतिशत
1	प्रथम पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	7385.8	17.75
2	गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी)	41600	8492.35	20.41
3	संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	802	1.94
4	विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग.सेमी.)	41600	12816	30.80

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि जून 2013 से दिसंबर 2018 तक हिंदुस्तान समाचार पत्र ने केदारघाटी आपदा से सबंधित समाचारों को विशेष पृष्ठ पर 12816 वर्ग सेमी. में प्रकाशित किया। इसका कुल प्रतिशत 30.80 रहा। गढ़वाल पृष्ठ पर हिंदुस्तान समाचार पत्र ने 8492.35 वर्ग सेमी. यानि 20.41 प्रतिशत स्थान दिया। प्रथम पृष्ठ पर कुल 17.75 प्रतिशत यानि 7385.8 वर्ग सेमी. स्थान आपदा सबंधित खबरों को दिया गया। संपादकीय पृष्ठ पर 1.94 यानि 810 वर्ग सेमी. स्थान पर आपदा सबंधित लेख प्रकाशित किए गए।

आरेख संख्या–7.8

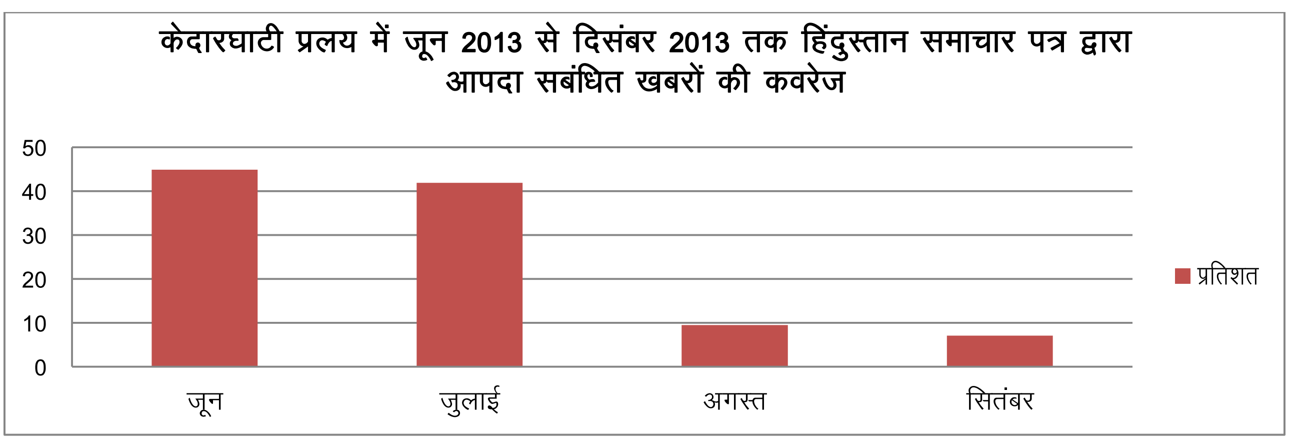

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक अमर टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र द्वारा आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

तालिका संख्या–7.9

क्र. सं.	पृष्ठ	कुल 25 सप्ताह के पृष्ठ का क्षेत्रफल**(वर्ग सेमी.)** (52×32×25)	**समाचार कवरेज (वर्ग सेमी.)**	प्रतिशत
1	प्रथम पृष्ठ में कवरेज(वर्ग सेमी.)	41600	1119.52	2.69
2	गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)	41600	2085.85	5.01
3	संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	350	0.84
4	विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	2250	5.40

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार पत्र ने जून 2013 से लेकर दिसंबर 2013 तक केदारघाटी आपदा से सबंधित खबरों को सबसे ज्यादा विशेष पृष्ठ पर 2250 वर्ग सेमी. यानि 5.40 प्रतिशत स्थान दिया। गढ़वाल पृष्ठ पर यह प्रतिशत 5.01 प्रतिशत रहा। इस पृष्ठ पर 2085.85 वर्ग सेमी. में आपदा खबरों को प्रकाशित किया गया। प्रथम पृष्ठ पर 1119.52 वर्ग सेमी. में आपदा सबंधी खबर प्रकाशित की। इसका प्रतिशत 2.69 है। संपादकीय पृष्ठ पर 350 वर्ग सेमी. यानि 0.84 प्रतिशत स्थान आपदा खबरों को दिया।

आरेख संख्या–7.9

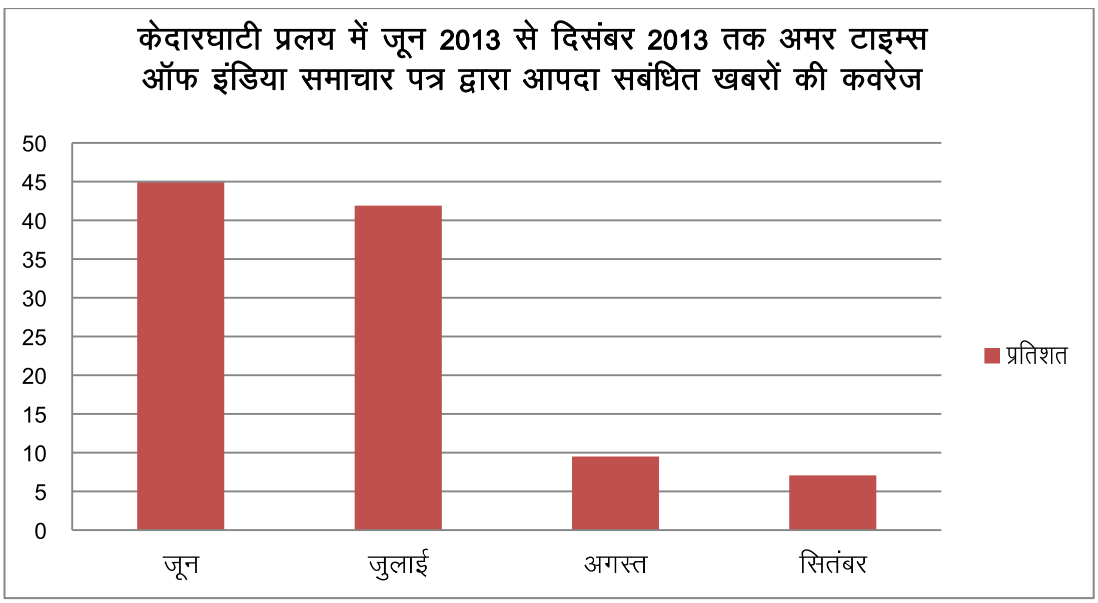

केदारघाटी प्रलय में जून 2013 से दिसंबर 2013 तक हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्र द्वारा आपदा सबंधित खबरों की कवरेज

तालिका संख्या–7.10

क्र. सं.	पृष्ठ	कुल 25 सप्ताह के पृष्ठ का क्षेत्रफल**(वर्ग सेमी.)** (52×32×25)	**समाचार कवरेज (वर्ग सेमी.)**	प्रतिशत
1	प्रथम पृष्ठ में कवरेज(वर्ग सेमी.)	41600	3239.5	7.78
2	गढ़वाल पृष्ठ में (वर्ग सेमी.)	41600	4579	11.01
3	संपादकीय पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	367.5	0.88
4	विशेष पृष्ठ में कवरेज (वर्ग सेमी.)	41600	10768.18	25.88

इस सारणी के अनुसार हिंदुस्तान टाइम्स समाचार पत्र ने जून 2013 से लेकर दिसंबर 2013 तक केदारघाटी आपदा से सबंधित खबरों को विशेष पृष्ठ पर सबसे ज्यादा 10768.18 वर्ग सेमी. स्थान दिया। इसका प्रतिशत 25. 88 है। गढ़वाल पृष्ठ पर 4579 वर्ग सेमी. में आपदा सबंधी खबर प्रकाशित हुई। यह 11.01 प्रतिशत है। प्रथम पृष्ठ पर 7.78 प्रतिशत स्थान आपदा सबंधी खबरों को मिला, यानि 3239.5 वर्ग सेमी. में यह खबरें प्रकाशित हुई। संपादकीय पृष्ठ पर केवल 0.88 प्रतिशत स्थान पर यानि 367.5 वर्ग सेमी. में आपदा सबंधी खबरें प्रकाशित हुई।

आरेख संख्या–7.10

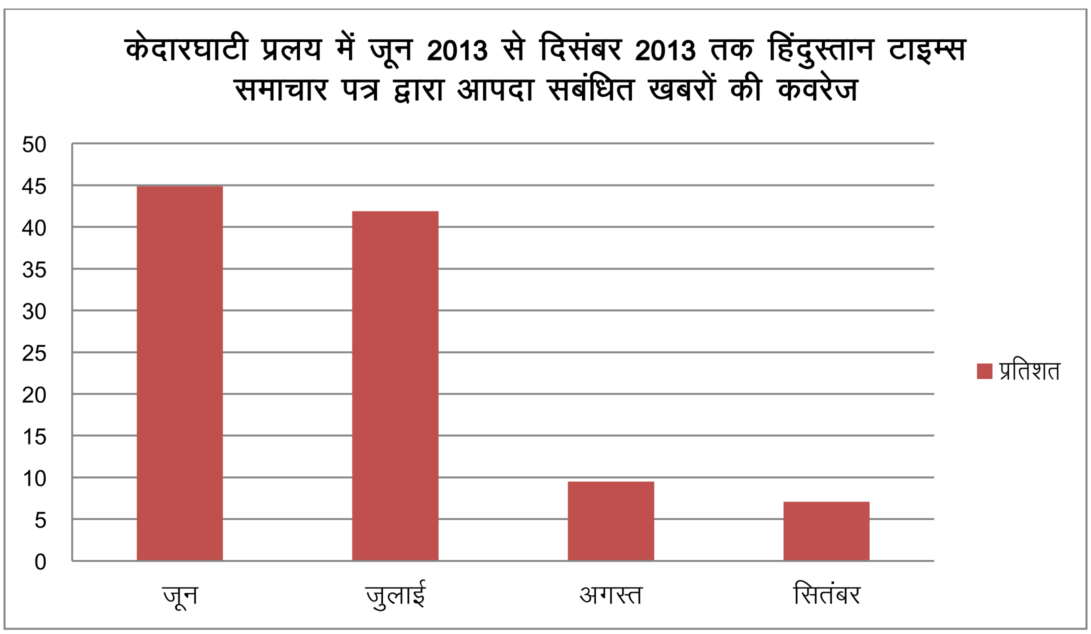

18 जून 2013 से 18 दिसंबर 2013 तक समाचार पत्रों द्वारा आपदा समाचारों का कवरेज प्रतिशत

तालिका संख्या–7.11

क्र.सं.	समाचार पत्र	कुल कवरेज	प्रतिशत
1	अमर उजाला	25465.25	15.30
2	हिंदुस्तान	29496.15	17.72
3	हिंदुस्तान टाइम्स	18953.93	11.39
4	टाइम्स ऑफ इंडिया	5825.38	3.50

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि शोध अध्ययन की अवधि 18 जून 2013 से 18 दिसंबर 2013 तक अमर उजाला समाचार पत्र ने जून 2013 की आपदा से सबंधित कुल 15.30 प्रतिशत वर्ग सेमी. क्षेत्रफल स्थान दिया। जबकि हिंदुस्तान समाचार पत्र ने 17.72 प्रतिशत वर्ग सेमी. क्षेत्रफल में इन खबरों को स्थान दिया। अंग्रेजी भाषा के हिंदुस्तान टाइम्स ने 11.39 प्रतिशत वर्ग सेमी. क्षेत्र तथा टाइम्स ऑफ इंडिया ने इन्हीं खबरों को 3.50 वर्ग सेमी क्षेत्र में प्रकाशित किया।

आरेख संख्या–7.11

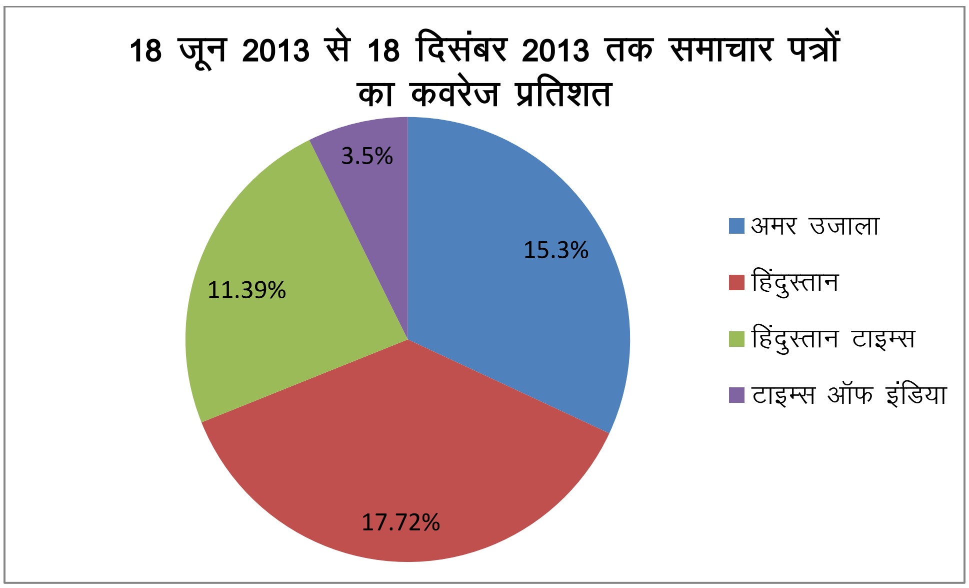

निष्कर्ष और सुझाव–

मीडिया जनजागरण का एक सशक्त माध्यम है। प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने आपदा प्रबंधन में योगदान देकर आपदा प्रबंधन में नई दिशा की नींव रखी है। केदारघाटी में आई आपदा को उजागर करने में मीडिया की विशेष भूमिका रही। आपदा से प्रभावित क्षेत्रों में समाचार कवरेज के माध्यम से आपदा से बचाव, राहत एवं पुनर्निर्माण कार्यों को बढ़ावा देने में मीडिया ने भरपूर योगदान दिया। आपदा के समय मीडिया को अधिक सक्रियता से काम करना चाहिए। प्राकृतिक

आपदाओं के दौरान सार्वजनिक सूचना तंत्र पहले प्रभावित होता है। लेकिन प्रभावित क्षेत्रों और मीडिया में संपर्क प्रभावित रहता है। ऐसे में आपदा प्रबंधन में मीडिया की भूमिका और बढ़ जाती है। क्योंकि मीडिया का प्रभाव व्यापक स्तर पर पड़ता है इसलिए मीडिया को आपदा के दौरान सनसनीखेज रिपोर्टिंग से बचने तथा अफवाहों से दूर रहना चाहिए। मीडिया को तथ्यों की जांच–पड़ताल कर ही समाचारों का प्रकाशन करना चाहिए। आपदा से पूर्व वैज्ञानिक शोधों एवं सुझावों तथा मौसम विज्ञान की भविष्यवाणी पर संभावित प्राकृतिक आपदा पर जागरूकतापरक समाचारों का इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रसारण तथा समाचार पत्रों में प्रकाशन किया जाना चाहिए। जिससे आपदा से होने वाली हानि को कम किया जा सके। मीडिया को आपदा के बाद प्रभावित क्षेत्रों की सही स्थिति समाचारों के माध्यम से शासन–प्रशासन के समक्ष उजागर करनी चाहिए। जिससे आपदा प्रबंधन के कार्यों में मदद मिल सके। आपदा प्रबंधन के दौरान सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा आपदा प्रभावितों को राहत एवं पुनर्निर्माण कार्यों का लाभ दिलाने में समाचारों की स्थलीय कवरेज के माध्यम से मीडिया को सशक्त भागीदारी निभानी चाहिए।

संदर्भ सूची

1–हिंदुस्तान समाचार पत्र दिनांक 26 दिसंबर 2013पृष्ठ 11।

2–हिंदुस्तान, 16 जून 2014, पेज, 07।

3- Source : https://en.wikipedia.org

4–अध्ययन बुक्स, नई दिल्ली, आपदा प्रबंधन, पीएस नेगी, पेज 134–141

5––एनआईडीएम पब्लिकेशन उत्तराखंड डिजास्टर–2013

6–इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विवि, पीजीडीडीएम, आपदा तैयारी, पेज 165–166।

संदर्भ सूची

1. डब्लूडब्लूडब्लू.अमर उजाला.कॉम
2. हिंदुस्तान समाचार पत्र विकिपीडिया
3. हिंदुस्तान टाइम्स–विकिपीडिया
4. द टाइम्स ऑफ इंडिया विकिपीडिया

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM